शत्रुंजय महातीर्थ का आदिश्वर मंदिर और चतुर्मुख प्रासाद

Dr. Girish P. Vaghela
Visiting Lecturer
Department of History
Mob. No. 9974684483
E-mail: girishvaghela84@gmail.com
M. K. Bhavnagar University,
Bhavnagar
Gujrat

१. प्रास्ताविक

भारतीय इतिहास में शिल्प-स्थापत्य कला का बड़ा ही महत्व रहा है। भारत देश में कई सारे धर्म विद्यमान है। भारत के धार्मिक और बिन धार्मिक क्षेत्रों में स्थापित महलों, मंदिरों, देवालय, मस्जिदों, गुफाएँ आदि में स्थापित कला विश्व धरोहर में शामिल है। मानव निर्मित स्थापत्यों से भारतीय इतिहास में स्थापत्य कला को बड़ा ही प्रोत्साहन मिला है । ऐसे ही एक धार्मिक स्थापत्य के रूप में बात करे तो पालीताणा (गुजरात) में शत्रुंजय महातीर्थ जो जैन धर्म का सबसे बड़ा पवित्र यात्राधाम माना जाता है। पालीताणा स्थित शत्रुंजय महातीर्थ को शत्रुंजय पर्वत पर बने जैन मंदिरों के समूहों से कारण इसे शत्रुंजय महातीर्थ के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर बहुत सारे मंदिरों का निर्माण होने की वजह से इस पालीताणा शहर को ‘ मंदिरों की नगरी ’ के नाम से भी जाना जाता है । प्राचीन समय से लेकर आज दिन तक यहाँ जैनों और सरकार के माध्यम से इसकी देखरेख हो रही है । शत्रुंजय पर्वत पर कई सारे प्राचीन मंदिर है जिसे हमारी राष्ट्रीय धरोहर में शामिल किया जा सकता है ।

शत्रुंजय महातीर्थ का संबंध मध्यकालीन भारत से है | मध्यकालीन भारत में मुगलों की सत्ता के समय शत्रुंजय महातीर्थ का जीर्णोद्धार कई बार हुआ | जिसका उल्लेख अकबर, शाहजहां, जहांगीर और औरंगजेब के द्वारा दिए गए दान पत्रों में मिलता है ।

भारत में स्थापत्य कला विशेषकर मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से जैन धर्म का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है । यह प्रसंग का उल्लेख किया गया है | वस्तुतः जैन तीर्थों में जैन मंदिरों का बाहुल्य है । शत्रुंजय पर्वत पर सहस्त्र मंदिर है । भारतवर्ष में बने जैन मंदिरों का शिल्प-स्थापत्य निजी विशेषता रखता है ।

२. मंदिर कला की उत्पत्ति और विकास

स्थापत्य के इतिहास के परिदृश्य पर विचार करते हुए कहा जा चुका है कि स्थापत्य कला धार्मिक एवं अलौकिक दो रूपों में विकसित हुई । यह भी स्पष्ट किया गया है कि सभ्यता के उष: काल में मानवीय मनीषा के विकास के साथ-साथ चारों ओर परिव्याप्त प्रकृति को देखकर मानव मन में उसे

जानने, उससे संपर्क साधने एवं उसकी सहायता प्राप्त करने की इच्छा हुई । इसीका परिणाम था कि मानव ने प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियों की स्तुति तथा उपासना के क्रम में एक पद्धति का ही निर्माण कर डाला । भौतिक प्रकृति के अलौकिक कार्यों को अहर्निश गतिमान देखकर उसके प्रति दिव्यता की भावना उत्पन्न हुई और देव परिकल्पना स्थापित हो गई।[१]

भौतिकता की स्थूलता के अतिरिक्त आर्थिक विचारों की अभिव्यक्ति के क्रम में मंदिर कला ने वैज्ञानिक एवं शास्त्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया । 'यदंडे तद ब्रह्माण' तथा 'देवोभूत्वा देवं यजेत' जैसे विचारों से मंदिर को भी ब्रह्मांड की अवधारणा से जोड़ दिया गया । "मेसोपोटामिया के जिगुर(साशीखर मंदिर) का अनुविक्षेप तथा अनुभाग इस बात का घोतक है कि वह ब्रह्मांड का एक वास्तु शिल्पीय रेखाचित्र था।"[२] इसी प्रकार मंदिर भी विश्व संस्थान की प्रतिकृति के रूप में निर्मित हुए ।

मंदिर को प्रसाद पुरुष भी कहते है । प्रतीक शास्त्रियों ने मंदिर के अंग-प्रत्यंग के निर्माण का उद्देश्य एवं विधान निश्चित किया है । मंदिर निर्माण की पृष्ठभूमि में दार्शनिक रहस्य निहित है। देव मंदिर परम पुरुष का प्रतीक है ।[३] आकार, प्रकार, स्वरूप, ऊंचाई, ध्वज, कलश, बाह्य अलंकरण, वेदी, प्राचीर, प्रदक्षिणा आदि सभी का धर्म शास्त्रीय तथा आगमशास्त्रीय महत्व है। यंत्रों में एक बिंदु एक के बाहर चतुष्कोण प्रकार रहता है। इस प्रकार मंदिर के साथ प्रासाद वेदी और प्रकार के तीन चतुष्कोण होते है । मंदिर, स्तूप, स्तम्भ तथा शिवलिंगादि इन्हीं सिद्धांतों पर बनते है । इस प्रकार पूजा, आराधना के लिए जिस मंदिर की प्रारंभिक आवश्यकता हुई वही मंदिर कला, धर्म, दर्शन, तंत्र प्रतीक एवं कला के माध्यम से गूढ रहस्यमय होते चले गए। निष्ठा, श्रद्धा एवं धर्म-प्राणता के कारण यही मंदिर देशकाल, मतमतांतरों के कारण सरल, जटिल, विशाल बनने लगे । विशाल पर्वत शृंखलाओं में अनंत धनराशि खर्च करके भी बने । यही मंदिर आज स्थापत्य की धरोहर है।

३. मंदिर स्थापत्य की तीन शैलीयाँ

धार्मिक स्थापत्य की दृष्टि से मंदिर वास्तु की कला भारतीय कला के इतिहास में सर्वाधिक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण है । भारत में मंदिर निर्माण की परंपरा बहुत प्राचीन है । यहाँ मंदिर निर्माण में अनेक शैलियों का प्रयोग हुआ है । वस्तुतः विभिन्न काल के शिल्पियों ने मंदिर स्थापत्य को विभिन्न परिस्थितियों के कारण भिन्न स्वरूप प्रदान किया । बाद में वही स्थापत्य की विशेषता या पहचान हो गई और शिल्प की शैली के रूप में व्यह्यत होने लगी । अतैव मंदिरों की निर्माण परंपरा को दृष्टि में रखकर ही उसका अनुकरण-अनुसरण किया गया और वह शैली विशेष के रूप में पहचानी गई।

भारतवर्ष में निर्मित समस्त मंदिर समूह को यदि एक दृष्टि से देखे-परखे तो मुख्य रूप से जो विशेषताएँ पाते है, उसके आधार पर उन्हें तीन शैलियों में विभक्त किया गया है । वे प्रमुख तीन शैलियाँ नागर, द्रविड़ और बेसर है । इस तीन शैलियों के अतिरिक्त भी प्राचीन स्थापत्य ग्रंथों में अनेक शैलियों

के नाम प्राप्त होते हैं । लतिम, साधार, भूमि, नागर पुष्पक, विमान आदि इसमें शामिल है । किन्तु यह सभी नाम उपर्युक्त शैलियों के अंदर ही समाविष्ट है।

४. जैन मंदिरों की विशेषताएँ

1. जैन मंदिरों इनके आंगन विस्तृत होते हैं, आंगन के चारों और स्तंम्भो पर आश्रित छोटे-छोटे अनेक मंदिर होते हैं । मंदिर समूह के मध्य में प्रमुख मंदिर का निर्माण प्रमुखता से किया जाता है।
2. जैन मंदिरों में प्रायः चारों और मुख के रूप में द्वार होते हैं । मंदिर भी चतुर्मुख होते है जिससे चारों दिशाओं से देखा जा सके।
3. जैन मंदिर मुख्यत: जैन तीर्थों तक सीमित है, किंतु साथ ही अन्यत्र भी बहूश: मिलते है। मुख्यतः सांप्रदायिक सद्भाव के रूप में बौद्ध, जैन एवं हिंदू मंदिरों का एक साथ भी निर्माण हुआ है।
4. जैन मंदिर प्राय: समूह के रूप में मिलते हैं।
5. जैन मंदिरों का नव निर्माण की अपेक्षा जीर्णोद्धार अधिक हुआ है और यही उत्तम भी माना जाता है।
6. जैन मंदिरों में अलंकरण की प्रचुरता है तथा शिल्प-कौशल का प्रदर्शन है।
7. जैन मूर्तियों में समानता, सादगी एवं सरलता हैं।
8. जैन मंदिर अभिजात्य आलंकारिकता तथा ऐश्वर्य अभिव्यक्ति से युक्त है।
9. जैन मंदिर स्थापत्य कला के केंद्र रहे हैं।

इस प्रकार जैन मंदिरों की भारतवर्ष में एक समृद्ध परंपरा रही है । जैन मंदिरों में आध्यात्मिक पक्ष इतना उर्जस्वित नहीं रहा है जितना कलात्मक पक्ष है । जैन मंदिरों में प्रदक्षिणा पथ अंदर होता है उन्हें 'सांधार' कहा जाता है । जिनमें प्रदक्षिणा भूमि भीतर न होकर बाहर होती है उसे निरंधार प्रासाद कहा जाता है ।

गुजरात के काठियावाड़ में नागर और बेसर दोनों शैली के मंदिर मिलते हैं । वहाँ 10वीं से 13वीं सदी तक मंदिर स्थापत्य उन्नत रहा, किन्तु आक्रांताओं ने उस क्षेत्र के मंदिरों को ध्वस्त कर दिया । वहाँ मंदिरों का निर्माण मुख्यतः चालुक्य सोलंकियों के शासनकाल में हुआ था।

हिंदू एवं जैन मंदिरों का स्थापत्य लगभग समान होने पर भी कुछ भिन्नता है। जैन मंदिरों के आंगन के चारों ओर स्तंभयुक्त छोटे-छोटे मंदिर समूह के मध्य मुख्य मंदिर निर्मित होता है। जैन मंदिरों का मुख चारों ओर होता है तथा मंदिर भी चतुर्मुख होते हैं । अजमेर, दिल्ली, धार और अहमदाबाद आदि के भव्य जैन मंदिरों को विदेशी आक्रांताओ ने ध्वस्त कर मस्जिद में बदल दिया । गुजरात में शत्रुंजय (पालिताना), तारंगा, पाटन, गिरनार, अहमदाबाद आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थानों पर महत्वपूर्ण जैन मंदिर

है, उनमें पालिताना स्थित शत्रुंजय पर्वत पर स्थित जैन मंदिर स्थापत्य कला और वास्तुकला की द्रष्टि से विशेष रूप से दर्शनीय माना जाता है ।

५. शत्रुंजय महातीर्थ

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में हिंदू एवं जैन धर्म के अनुयायी द्वारा इसी समय देवालयों के जीर्णोद्धार और नए देवालियों के निर्माण की प्रवृतियाँ देखने को मिलती है। खास करके सल्तनत के समय की तुलना में मुगल सत्ता में सविशेष मात्रा में मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार का उल्लेख दानपत्र और ताम्रपत्र में हुआ है । शत्रुंजय महातीर्थ का जैन तीर्थों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। यह शत्रुंजय महातीर्थ गुजरात और विश्वभर में प्रसिद्ध है। शत्रुंजय पर्वत पर बिराजमान जैन मंदिर विश्व में प्रसिद्ध है । उसका बांधकाम और स्थापत्य कला बेनमून है । मुगल समय के दौरान शत्रुंजय महातीर्थ पर कई सारे मंदिरों का जीर्णोधार और निर्माण हुआ था । जिसमें मुख्य जिनालय आदिश्वर भगवान के मंदिर के पास का चतुर्मुख प्रासाद का निर्माण भी इसी समय हुआ था । शत्रुंजय पर्वत पर संघवी रूपजी ने सन १६१९ में चतुर्मुख प्रासाद का निर्माण करवाया था । जिसका स्थापत्य और कला की दृष्टि से बहुत ही सुंदर है । शत्रुंजय पर्वत पर सुपार्श्वनाथ का मंदिर सन १६४० में किया गया था।[४]

'मिराते अहमदी' मुगल समय के अंत बाद थोड़े ही सालों में लिखा हुआ है। उसमें गुजरात के प्रसिद्ध देवालयो में इनका उल्लेख हुआ है । अभिलेखों, साहित्य और पुरावस्तुकीय है । यह तीन प्रकारों के साधनों के माध्यम से गुजरात के इस समय के देवालयों के बारे में जानकारी मिलती है । मध्यकालीन भारतीय इतिहास में गुजरात के प्रसिद्ध मंदिरों में शत्रुंजय महातीर्थ के जैन मंदिर काफी प्रसिद्ध थे, और आज भी विश्व प्रसिद्ध है।[५]

५.१. शत्रुंजय महातीर्थ पर का मुख्य देवालय: आदिश्वर मंदिर

शत्रुंजय महातीर्थ पश्चिम भारत का सबसे बड़ा जैन तीर्थ है। इस पर्वत पर कई सारे मंदिरों का निर्माण हुआ है । जिसकी वजह से यह मंदिरों की नगरी के नाम से जाना जाता है । शत्रुंजय पर्वत का सबसे बड़ा और मुख्य मंदिर आदिश्वर मंदिर के पूर्व द्वार के रंग मंडप में एक स्तंभ पर ८७ पंक्तियों में एक शिलालेख है। जिसमें लिखा है कि शत्रुंजय पर्वत पर के आदिश्वर मंदिर का नव निर्माण इससे पहले संवत १५८७ में कर्माशाह ने करवाया था । किन्तु अति प्राचीनता की वजह से थोड़े ही समय में यह मंदिर जर्जरित हो गया । फिर ओस वंश के सोनी वछिया के पुत्र तेजपाल ने बादशाह अकबर से बहुमत प्राप्त कर चुके मुनि हीरविजयसूरी की प्रेरणा से इस मंदिर का समारकाम करवाया था । इस मंदिर का शिखर बहुत ऊँचा है जो दूर तक दिखाई देता है । शिखर पर १२४५ कुंभ बीराजमान है । मंदिर पर २१ सिंहो की मूर्तियाँ है । ४ योगिनी और १० दिकपाल की स्थापना की गई है । मंदिर के चारों ओर ७२ देवकुलिका है। यहाँ हर एक मंदिर जिन मूर्ति से विभूषित है । यह मंदिर ४ गवाक्ष, ३२ पुतलियाँ और

३२ तोरण से सुशोभित है । मंदिर में २४ हाथी और ७४ स्तंभ है। "नंदी वर्धन" के नाम से यह नया मंदिर संवत १६४९ में तैयार हुआ था । संवत १६५० (सन १५९४)में तेजपाल ने शत्रुंजय की यात्रा करके हीरविजयसूरी महाराज के हाथों इसकी प्रतिष्ठा की गई थी।[६]

इस मंदिर का स्थापत्य शत्रुंजय पर्वत पर दूसरे प्राचीन मंदिरों के स्थापत्य जैसा ही है । आदिनाथ चौमुख मंदिर और इस मंदिर में फर्क सिर्फ इतना ही है कि यह मंदिर दो मजलो में स्थित है । मूलनायक की मूर्ति गर्भ गृह के अंदर दीवाल के पास पीठिका पर स्थापित है । यह मूर्ति असाधारण कद की है। शिखर की ओर ध्यान करने से काष्ठ कला लोगों को आकर्षित करती है। गर्भगृह और रंगमंडप में कई सारी मूर्तियाँ है । गर्भगृह के दरवाजों के पास गजारूठ नाभीराज और मनुदेवी की स्थापत्य कला दिखाई देती है।[७]

इस मंदिर की ऊँचाई ५२ हाथ की है । चार कलात्मक गवाक्ष उसकी भव्यता में वृद्धि करता है। गवाक्ष के अभाव पुतलियाँ और तोरण मंदिर की कलात्मकता को सुंदर बनाती है। मंदिर ७२ स्तंभों के ऊपर खड़ा है । इस मंदिर के बाहर दो सुंदर दरिया है । मंदिर के पास रथयात्रा के लिए आरस बिछाया हुआ चौक है ।[८]

शत्रुंजय महातीर्थ का यह मुख्य मंदिर और इसकी चोटी दूर तक दिखाई देती है । इसकी स्थापत्य कला बेनमून है । जैन धर्म का सबसे बड़ा और पवित्र स्थान शत्रुंजय महातीर्थ और यहाँ के मंदिरों की स्थापत्य कला लोगों और प्रवासियों को आकर्षित करती है।

५.२. शत्रुंजय महातीर्थ पर का चतुर्मुख प्रासाद

शत्रुंजय पर्वत पर जो मुख्य मंदिर में चतुर्मुख विहार के नाम से मुख्य प्रासाद है, यह चतुर्मुख प्रासाद बादशाह जहांगीर के समय में संवत १६७५ (सन १६१९) में अहमदाबाद के पोरावाड संघवी सोमजी के पुत्र संघवी रूपजी ने शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा के लिए संघ निकाल के युग प्रधान जिनचन्द्रसुरी के शिष्य जिनसिंहसूरी के पटधर जिनराजसूरी ने इसकी प्रतिष्ठा की थी । इसका उल्लेख मूलनायक के चारों ओर प्रतिमाओं के बैठक पर लिखे शिलालेखों में किया गया है । चतुर्मुख प्रासाद २७० x ११६ फिट विस्तार में स्थित है | x २ फीट की पीठिका पर खडे यह प्रासाद की ऊंचाई और चौड़ाई ६७ x ५७ फीट है । गर्भगृह में आरस पत्थर से बना १२ फीट का चौरस और २ फीट ऊंचाई वाला सिंहासन है । इस सिंहासन पर चारों दिशाओं की ओर मुख रखें आदिनाथ की आरस पत्थर से बनी ४ मूर्तियाँ स्थापित की गई है । इसलिए इस प्रासाद को "चतुर्मुख प्रासाद" या "चौमुखी मंदिर" के नाम से जाना जाता है।[९]

इस चतुर्मुख प्रासाद की मूर्तियाँ १० फीट ऊँची है। सिंहासन पर स्तंभ दिखाई देते हैं। गर्भगृह के ऊपर ९६ फीट ऊँचा शिखर है । गर्भगृह के चारों ओर एक-एक प्रवेश द्वार है। इसके तीनों ओर चौकी (मुख्य मंडप) है । उसका पूर्व द्वार गुढमंडप की ओर पड़ता है । उत्तर और दक्षिण की ओर चौकी पर सात

छोटे-छोटे घुम्मट है जिसकी चारों ओर एक-एक छोटा शृंग है । उत्तर दिशा की चौकी की ओर पूर्व प्रासाद के ऊपर के मजले पर जाने के लिए सीढ़ी है । यहाँ आदिनाथ की आरस से बनी ८ मूर्तियाँ है। शिखर का ऊपर वाला हिस्सा कुछ नया जान पड़ता है जबकि पश्चिम की ओर प्राचीन भाग है । इसका गुढमंडप ३१ x ३१ फिट का है और इसके अंदर १२ स्तंभ है, जिसमें बीच के ८ स्तंभों पर मंदिर के घुम्मट की रचना की गई है । मंडप में तीन जगहों पर प्रवेश द्वार रखा गया है । इस मंडप के प्रासाद के आगे अलग से एक रंगमंडप किया हुआ है जिसमें १२ स्तंभों पर देवियों के स्वरूप को चित्रित किया है। यह मंदिर बनाने के लिए ४८ लाख रुपयों का खर्च हुआ था ।[१०] इसकी रचना और सुन्दरता से यह चतुर्मुख प्रासाद लोगों और प्रवासियों का ध्यान केंद्रित करता है।

६. मूल्यांकन

शत्रुंजय महातीर्थ का जैन तीर्थों में सबसे पवित्र स्थान माना जाता है । भारत में मुगल सत्ता के समय में जैन धर्म काफी विकसित था । शत्रुंजय महातीर्थ को ‘ जैनों की नगरी ’ माना जाता है। यह पालीताणा विश्व प्रसिद्ध है। पालीताणा में स्थित शत्रुंजय पर्वत पर जैनों के बहुत सारे मंदिर है जो खासकर सफेद आरस के पत्थरों से निर्मित है । यहाँ के कई सारे मंदिर प्राचीन समय से निर्मित हुए है । किंतु समय के बहाव और प्राकृतिक बदलाव से इन मंदिरों का जर्जरित होना मुनासिब था । इसीलिए जैन धर्म के अनुयायियों ने शत्रुंजय महातीर्थ के मंदिरों को उनकी मरम्मत और नव निर्माण का काम मुगल समय के बादशाहों के पास उनकी अनुमति लेकर करवाया था, जिसका उल्लेख मुगल बादशाहों के द्वारा दिए गए दान पत्रों में मिलता है । मुगल समय में जैन मंदिरों का निर्माण और मरम्मत का काम हो रहा था, जिसमें उन दिनों कारीगरों द्वारा किए गए स्थापत्य कला के मंदिर आज भी लोगों को आकर्षित करता है।

➢ पादटिप

१. शर्मा, श्याम, प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला, एवं मूर्तिकला, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, २०१२, पृष्ठ – १०२

२. शर्मा, श्याम, पूर्वोक्त ग्रन्थ, पृष्ठ – १०३

३. भारतीय प्रतिकशास्त्र, पृष्ठ – २६९

४. परिख,रसिकलाल; शास्त्री,हरिप्रसाद, ગુજરાતનોરાજકીય અને સાંસ્કૃતિક ઇતિહાસ, ગ્રંથ-૬,મુઘલયુગ, ભો.જે.વિદ્યાભવન,અમદાવાદ,૧૯૭૬, પેજ-૪૨૭

५. પરિખ,રસિકલાલ; શાસ્ત્રી, હરિપ્રસાદ, पूर्वोक्त ग्रंथ, पृष्ठ – ४२७

६. मुनि जिनविजयजी, प्राचीन जैन लेख संग्रह, भाग – २, लेख- १२

૭. Burgess, Jams, The Temple of Shatrunjaya and Palitana in Kathiyawad, P-25

૮. અ.પ્રે.શાહ,જૈનતીર્થ સર્વસંગ્રહ,ભાગ-૧, પેજ-૧૦૪

९. मुनि जिनविजयजी, प्राचीन जैन लेख संग्रह, भाग – २, लेख- १७

१०. शास्त्री, दु. के. ऐतिहासिक संशोधन, पृष्ठ – १८५

➢ सन्दर्भ साहित्य

१. Burgess, Jams, The Temple of Shatrunjaya and Palitana in Kathiyawad, 1869

२. मुनि जिनविजयजी, प्राचीन जैन लेख संग्रह, भाग – २, जैन आत्मानंद सभा, भावनगर, वीर संवत २४४८.

३. शर्मा, श्याम, प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला, एवं मूर्तिकला, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, २०१२

૪. દેસાઇ, રતિલાલ, શિલચંદ્રસુરિ, શઠ આણંદજી કલ્યાણજી પેઢીનો ઇતિહાસ, ભાગ-૧, અમદાવાદ, ૧૯૮૩

૫. દેસાઇ, રતિલાલ, શઠ આણંદજી કલ્યાણજી પેઢીનો ઇતિહાસ, ભાગ-૨, અમદાવાદ, ૧૯૮૩

૬. અ. પ્રે. શાહ, જૈનતીર્થ સર્વસંગ્રહ ,ભાગ – ૧

૭. પરિખ,રસિકલાલ; શાસ્ત્રી,હરિપ્રસાદ, ગુજરાતનોરાજકીય અને સાંસ્કૃતિક ઇતિહાસ, ગ્રંથ-૬,મુઘલયુગ, ભો.જે.વિદ્યાભવન,અમદાવાદ,૧૯૭૬

૮. આચાર્ય,નવીનચંદ્ર, ગુજરાતનો સાંસ્કૃતિક ઇતિહાસ,(ઇ.સ.૧૩૦૪થી૧૮૧૮), યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, અમદાવાદ, તૃતિય આવૃતિ,૨૦૧૫

૯. શાસ્ત્રી, હ્રુકે, ઐતિહાસિક સંશોધન

शत्रुंजय महातीर्थ और चतुर्मुख प्रसाद के चित्र

All Photos Sources: Jams Burgess, The Temples of Shatrunjaya. 1869

Temple of the Adishvar Bhagvan (Rushabhdev)

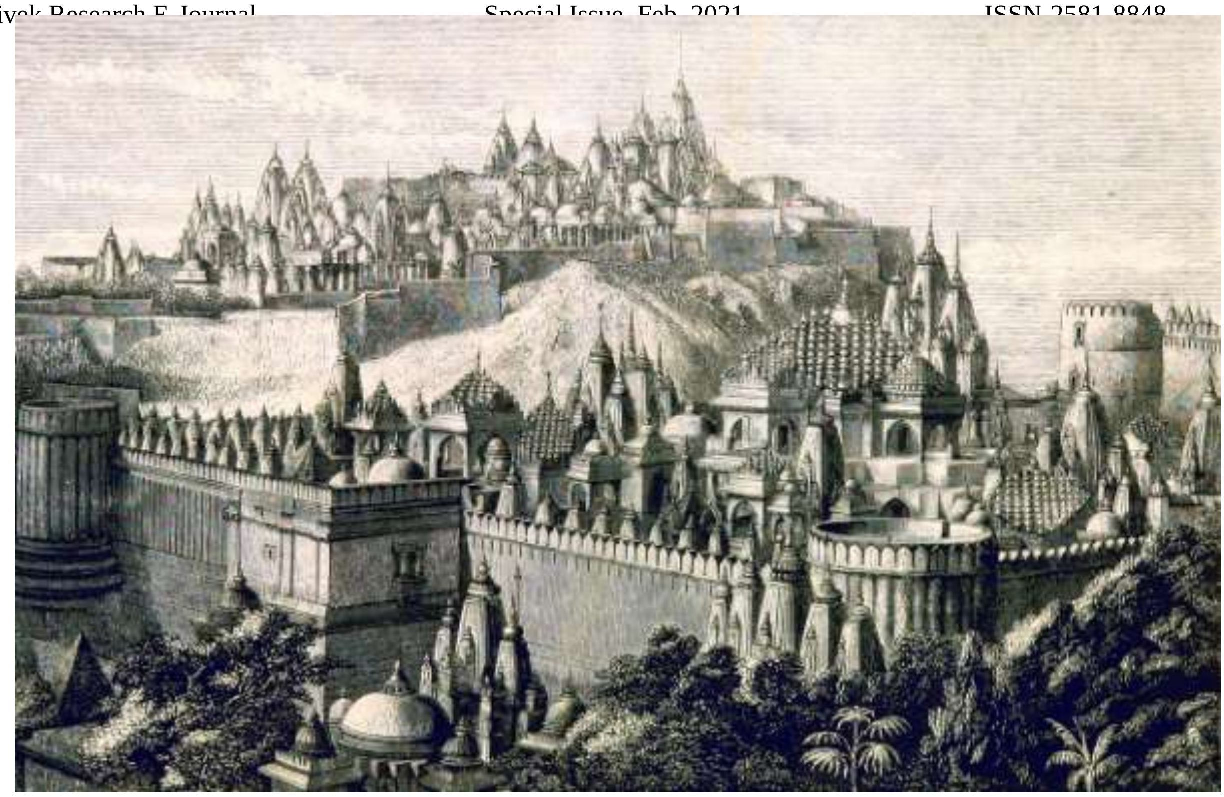

Shetrunjay_Palitana_Jain_Temples_drawing_1866

Chaumukh Image of Rishabhanatha **Chaumukh Temple of Ramaji Gandharia**

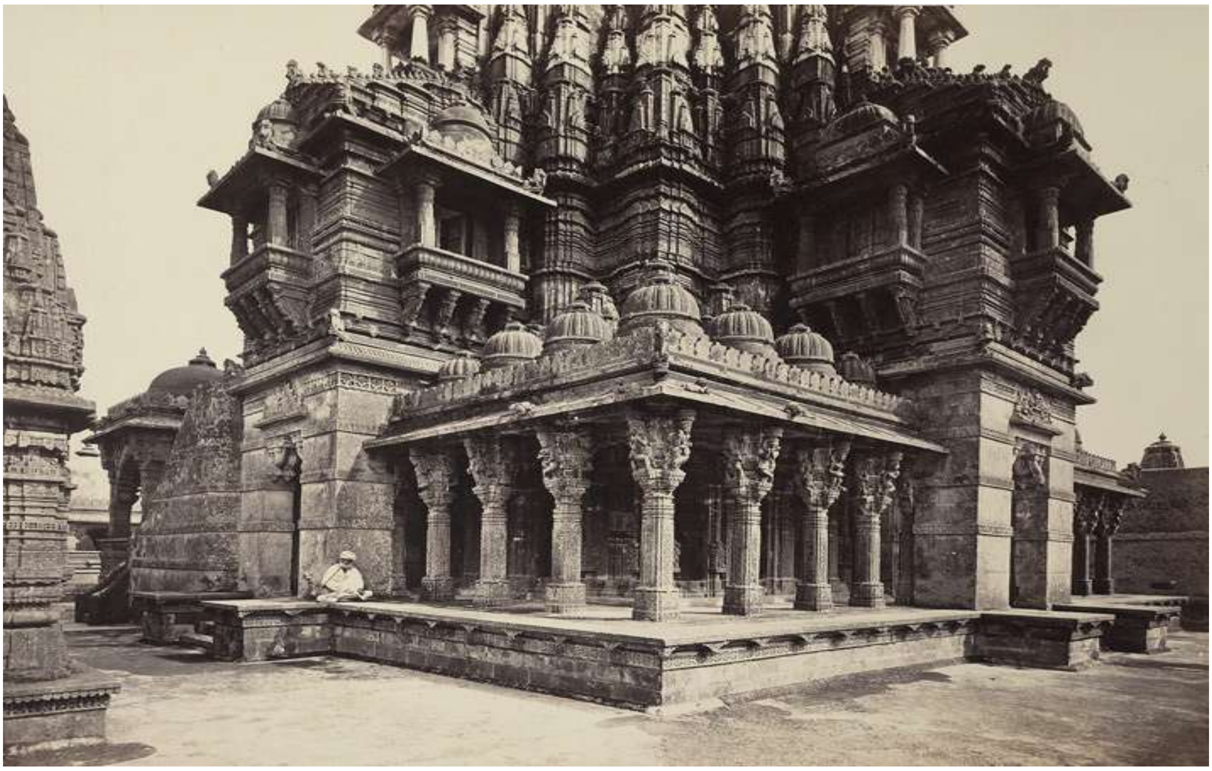

Chaumukh Temple from the N.W. showing the older portion

Chaumukh Temple from the West end of the Court [Satrunjaya]

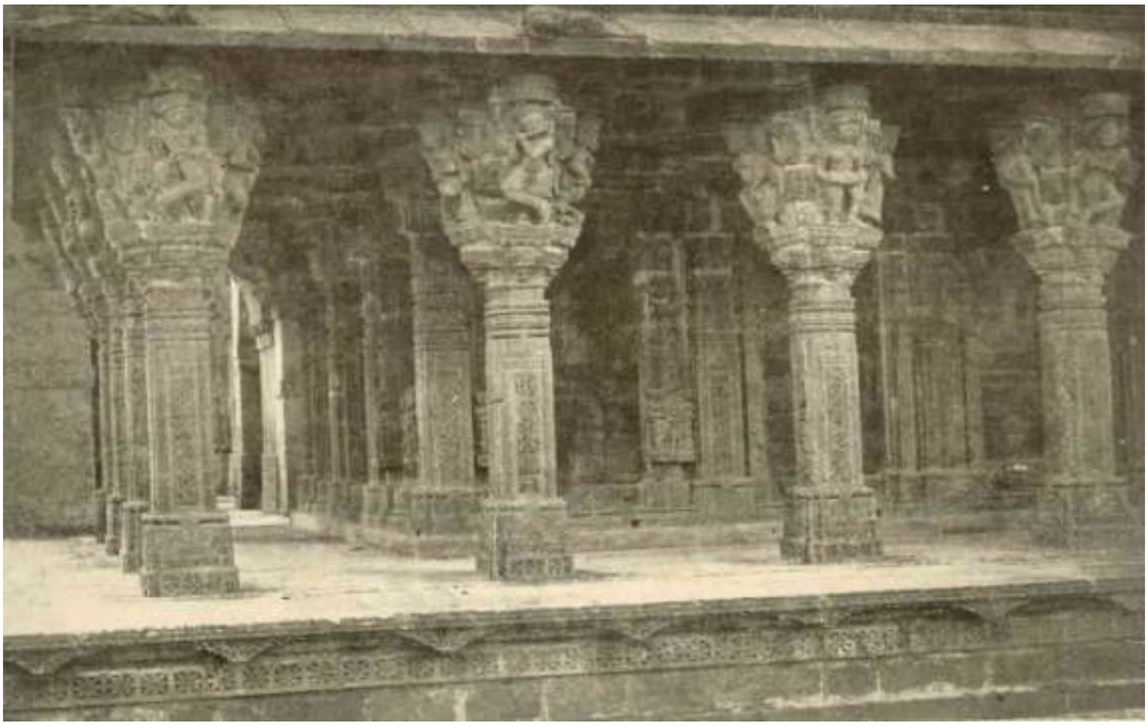

Columns of the Chaumukh

Columns on the South side of the Chaumukh [Satrunjaya]

Columns on the West face of the Chaumukh, North end

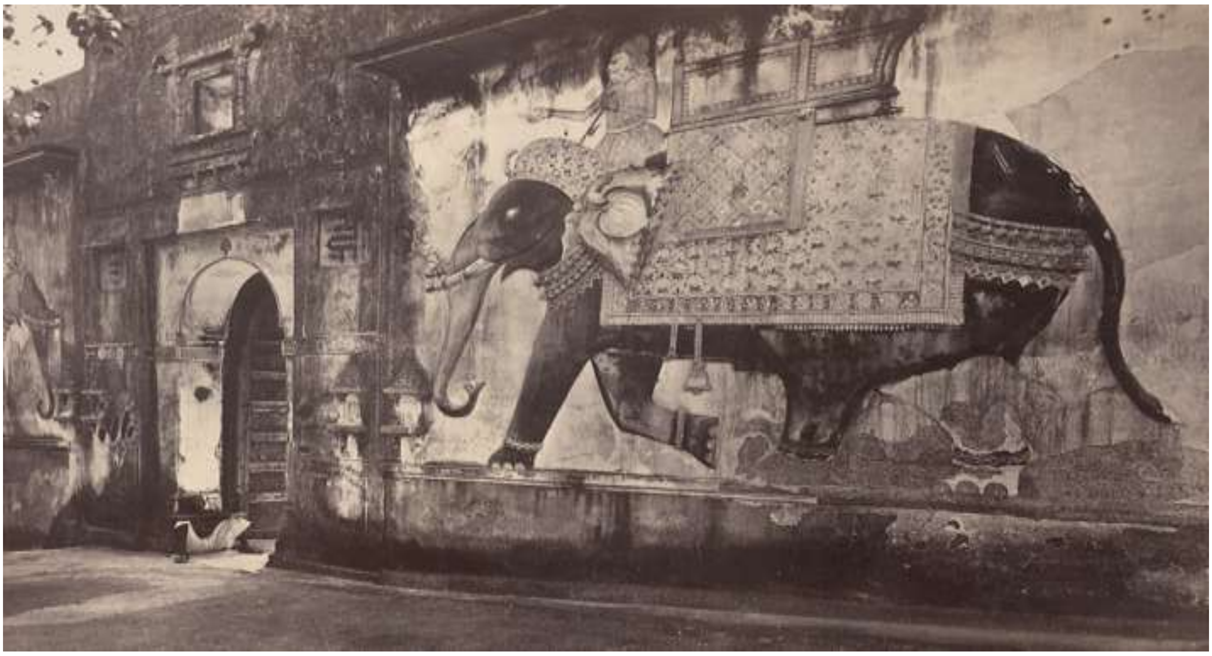

The Hathipola